M.A. Semester - I
Philosophy C.C - 03

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Notion of God According to Augustine
(Part - I)

Saint Augustine एक मध्ययुगीन दार्शनिक के रूप में हमारे सामने आते हैं। मध्ययुगीन दार्शनिक होने के कारण ये ईश्वर सम्बन्धी समस्याओं पर गहरी चिन्तन व्यक्त करते हैं, इनका ईश्वर सम्बन्धी विचार Plato और Christinity के ईश्वर सम्बन्धी विचारों से काफी प्रभावित दीख पड़ता है। ईश्वर की धारणा Augustine के दर्शन की केन्द्र बिन्दु है। अब हम Augustine के ईश्वर सम्बन्धी विचार की व्याख्या करेंगे —

Plato ने जो चरमतत्व की विशेषताओं का वर्णन किया था, उससे Augustine प्रभावित होते हैं। Plato के तत्व विचार और ईसाई धर्म के ईश्वर विचार का सम्मिश्रण ही अगस्टाइन का ईश्वर विचार है डेमोक्रेटीज ने चरम तत्व की व्याख्या करते समय कहा Atom is the ultimate reality. Plato अपने दर्शन में idea को reality मानते हैं। Plato के अनुसार सबसे मूल विचार idea of good है। इन्होंने idea of good या शुभ सम्प्रत्यय को सबसे मूल विचार या Ultimate reality कहा। जब हम Augustine के दर्शन में आते हैं तो घोषणा पाते हैं ईश्वर ही चरम तत्व है, उनके दर्शन में तत्वशास्त्र और धर्म दोनों का समन्वय हुआ है। Ultimate reality की बात वे तत्वशास्त्र

में करते हैं और ईश्वर की बात धर्म में करते हैं।

Augustine ने ईश्वर की अनेक विशेषताओं का वर्णन किया है, ईश्वर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ईश्वर शुभ है। Augustine के अनुसार goodness ईश्वर विचार का मूल है। Plato की तरह Augustine भी स्वीकारते हैं कि ईश्वर का ज्ञान इस बुद्धि के आधार पर होना सम्भव है। हममें विवेक शक्ति ईश्वर की ही देन है। इसके आधार पर न केवल संसार की वस्तुओं का हमें ज्ञान होता है, बल्कि ईश्वर का भी ज्ञान इससे होता है। Augustine यह स्वीकारते हैं कि एक दार्शनिक सत्य को प्रत्यक्ष रूप से देखता है। बुद्धि ही आत्मा की आँखें हैं, विद्वता परम सत्य है और विद्वता की प्राप्ति करना या ज्ञान की प्राप्ति करना ही ईश्वर को प्राप्त करना है। इस दृष्टिकोण से Augustine यह मानते हैं कि शुद्ध दर्शन शुद्ध धर्म के बराबर है, क्योंकि दर्शन और धर्म दोनों का उद्देश्य शाश्वत सत्ता की स्थापना करना है।

Augustine का विचार यह है कि कुछ विचारक ऐसा मानते हैं कि बुद्धि ईश्वरीय ज्ञान के लिए सक्षम नहीं है। Augustine का कहना है कि बुद्धि या विवेक ईश्वर की ही सृष्टि है। (बुद्धि ईश्वर का ही जन्मा है।) ईश्वर ने हमें बुद्धि इसलिए दिया है जिससे की हम दूसरे प्राणियों से अधिक पूर्ण हो सके। Augustine ने बतलाया है कि धर्म के लिए आस्था का होना ही आवश्यक माना जाता रहा है, लेकिन आस्था का होना भी उसी व्यक्ति में सम्भव है जिसमें विवेकशीलता हो। यह ठीक है कि क्रम के दृष्टिकोण से आस्था पहले आती है तब बुद्धि। पहले हमें एक सत्ता पर विश्वास करना होता है और तब बुद्धि के द्वारा हम उसके विषय में ज्ञान हासिल कर पाते हैं। Augustine का विचार है कि यद्यपि की आस्था का होना ज्ञान की एक शर्त है लेकिन यह ज्ञान नहीं है आस्था और

बुद्धि की यह विवेचना Augustine की दार्शनिक विचारधारा का विषय सिर्फ इसलिए रहा क्योंकि वे यह साबित कर देना चाहते थें कि ईश्वर का ज्ञान बुद्धि से हीं होना सम्भव है।

Augustine का विचार है, कि ईश्वर एक ऐसा प्राणी है जिससे अलग, जिससे बाहर और जिसके बिना कोई भी वस्तु अस्तित्ववान नहीं हो सकती। वह एक ऐसा प्राणी है जिसके कारण हीं हर वस्तु अस्तित्ववान है। ईश्वर हीं वस्तु का निर्माता स्रष्टा और उसके अन्त का कारण है। ईश्वर शुभ, न्यायिक तथा विद्वान है। Augustine ने बतलाया कि ईश्वर के ये गुण आकस्मिक नहीं है, बल्कि ईश्वर के ये आन्तरिक गुण हैं। यही बात ईश्वर के तत्वमीमांसीय गुणों के साथ है। सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ तथा शाश्वत होने का गुण ईश्वर के तत्वमीमांसीय गुण है। ईश्वर सर्वज्ञ है ऐसा वह इस दृष्टिकोण से है कि सभी चीजें उसमें है लेकिन वह सभी चीजों के बराबर नहीं है, उसके बाहर हीं है। अतः ईश्वर की धारणा सर्वेश्वरवादी नहीं है।)

ईश्वर की विशेषताओं का वर्णन आगस्टाईन के अनुसार इस प्रकार किया गया है—

ईश्वर शुभ है, यद्यपि की उसमें कोई गुण नहीं है, वह महान है यद्यपि की उसमें परिमाण नहीं है। वह बुद्धि का स्रष्टा है फिर भी वह उससे उच्च है, वह सर्वज्ञ है, जिससे किसी जगह में बंधा नहीं है, वह अस्तित्ववान है, लेकिन वह किसी विशेष जगह में नहीं है; वह शाश्वत है यद्यपि वह काल में नहीं है, वही सभी परिवर्तनों का कारण है यद्यपि वह स्वयं अपरिवर्तनशील है। यह ठीक है कि ईश्वर का ज्ञान बुद्धि से होता है, लेकिन बुद्धि के द्वारा ईश्वर को पूर्णतः नहीं जाना जा सकता।